वर्तमान ही भविष्य की खुशियों का आधार है : राजयोगिनी मीरा दीदी

आबू पर्वत, ज्ञानसरोवर, २५जुलाई २०१४। आज ज्ञानसरोवर के हार्मनी हॉल में ब्रह्माकुमारीज एवं इसकी भगिनी संस्था आर ई आर एफ की एक शाखा शिपिंग एवं एवीएशन द्वारा एक अखिल भारतीय सम्मेलन एवं चिंतन शिविर का आयोजन किया गया। इस चिंतन शिविर का विषय रखा गया, **जीवन का आनंद**। दीप प्रज्वलित करके पधारे हुए मेहमानों एवं ब्रह्माकुमारीज की वरिष्ठ बहनों तथा दादियों ने सम्मेलन का उद्घाटन किया।

शिपिंग एवं एवीएशन प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजक **राजयोगिनी मीरा बहन** ने सम्मेलन को अपना आर्शीवाद देते हुए कहा कि जीवन एक मधुर यात्रा है। हम सभी इस यात्रा को खुशियों से भरपूर कर सकते हैं। कहा गया है कि जैसा हम सोचते हैं वैसा ही होता है। अगर हम यह तय कर लें कि हमें आनंदित ही रहना है तो हम जरूर वैसा कर सकते हैं। हम अपने वर्तमान को सुधार कर अपना भविष्य सुधार सकते हैं। बीती को बिसार कर आगे की सुध लेने से सब कुछ सुधर जाता है। सदा काल की खुशी के लिए हमें स्वयं को जानना जरूरी है। स्वयं को जानना ही खुशियों की चाबी प्राप्त कर लेने जैसा है। इन तीन दिनों में परमपिता परमात्मा से आपको इसकी चाबी प्राप्त हो जाएगी।

ट्रिनीडाड और टोबैगो में भारतीय उच्चायोग के उच्चा युक्त **गौरी शंकर गुप्ता** ने अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए कहा कि मैं संस्थान के प्रति अपना आभार प्रकट करता हूँ। इस संस्थान ने दुनियाँ के १३६ देशों में शांति एवं सद्भावना का संदेश दिया है। मनुष्य कभी ने कभी स्वयं से यह जरूर पूछता है कि मैं कौन हूँ और मैं कहाँ से आया हूँ? आपको अपने इस प्रश्न का उत्तर यहाँ से प्राप्त होगा। आपको यह जानना चाहिए कि आप यह शरीर नहीं हैं बल्कि यह शरीर आपका है। यह सूक्ष्मता क्या है , यह समझना हमारे लिये आवश्यक है। यह हमारा शरीर ५ ज्ञानेन्द्रियों एंव ५ कर्मेन्द्रियों के द्वारा संचालित होती है। उनको भी नियंत्रित करने वाली है आत्मा। आत्मा को समझ कर जीवन में आनंद की प्राप्ति सहज हो जाती है। अतः आत्मा नुभूति जरूर करें।

महाराष्ट्र टूरिज्म डेवलपमेंट कॉरपोरेशन के सह प्रबंध निदेशक **सतीश आर सोनी** ने उक्त अवसर पर विशिष्ठ अतिथि के रूप में अपने उद्गार प्रकट किये। आपने कहा कि मैं आज यह मंच साझा करके खुद को गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ। इस सम्मेलन का विषय भी कितना सुंदर हैः जीवन का आनंद। पर्यटन आनंद प्रदान करने का एक विशेष माध्यम है। यह कितना सुंदर कार्य यहाँ हो रहा है, इस बात को दुनियाँ जाने तो अच्छा है। बिना किसी चार्ज के यहाँ कितना महान कार्य चल रहा है। हम धन्य हैं।

एयर पोर्ट अथारिटी ऑफ इंडिया, दिल्ली के जी एम भ्राता **संजय जैन** ने कहा कि इस संस्थान को मेरा हार्दिक धन्यवाद है। इन्होंने मुझे अपनी भावनाएं प्रकट करने का अवसर प्रदान किया है। मैं ब्रह्मकुमारीज के बारे में पहले से ही काफी कुछ जानता हूँ। मैंने इनके अनेक कार्यक्रम टी वी आदि के माध्यम से देखे हैं। हम सभी अपने जीवन में खुशियाँ तो चाहते हैं मगर कहाँ मिले वह हम जानते नहीं। अंदर झांकने पर हमें खुशियाँ मिलेंगी। ऐसी खुशियाँ प्रदान करने के लिए ही इस संस्थान ने यह आयोजन किया है। हमें इसका पूर्ण लाभ लेना है।

सहायक निदेशक राजस्थान टूरिज्म डिपार्टमेंट, **भानू प्रताप सिंह** ने उक्त अवसर पर कहा कि इस त्याग, तपस्या एवं प्रेम की नगरी आबू पर्वत पर मैं आप सभी का स्वागत करता हूँ। पर्यटन क बिना जीवन अधूरा है। यह आध्यात्म से जुड़ी संस्था जीवन के हर क्षेत्र में काफी संजीदगी से अपनी सेवाएं देती हैं। देश विदेश के टॉप प्रशासक इस संस्थान की सेवाओं का लाभ लेते रहते हैं। मैं इस संस्थान का काफी आभारी हूँ। इस संस्थान ने आबू पर्वत का नाम देश विदेश तक पहुँचा दिया है। आज आबू पर्वत पर इनके कारण करीब २५ लाख पर्यटक यहाँ आते हैं। यहाँ की कार्यशाला में भाग लेकर आप जानेंगे कि यह कितना अलौकिक संस्थान है।

इस प्रभाग की मुख्यालय संयोजक एवं ज्ञानसरोवर अकादमी की फैकल्टी **ब्रह्माकुमारी सुमन** बहन ने संस्थान का परिचय दिया। आपने बताया कि आप सभी अपने ही प्रभू पिता के घर में पधारे हैं। यह आपका ही घर है। १९३६ में इस संस्थान की स्थापना हुई थी।

परमपिता परमात्मा शिव बाबा ने प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के मानवी माध्यम का आधार लेकर इस संस्थान की स्थापना की। आज यह संस्था एक वट वृक्ष के रूप में पूरी दुनियाँ में विस्तारित हो चुका है। मानव मात्र को इसकी आध्यात्मिक शिक्षाओं का लाभ लगातार प्राप्त हो रहा है।

शिपिंग एवं एवीएशन प्रभाग की कार्यकारी सदस्य ब्रह्माकुमारी **कमलेश बहन** ने आज के कार्यक्रम का संचालन किया। ***(रपट : बी के गिरीश, ज्ञानसरोवर)***